

B.A (Hons) part-2.

Subject-Hindi

Paper-(composition 100marks)

UG

Topics-कुरुक्षेत्र के कवि रामधारी सिंह दिनकर का साहित्यिक परिचय लिखें।

Dr.Prafull kumar,HOD, Hindi Department RRS College Mokama
PPU Patna

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

हिंदी के प्रमुख कवि लेखक और निबंधकार रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में ओज, विद्रोह आक्रोश और क्रांति का स्वर एक ओर शीर्ष पर पहुंचा है तो दूसरी ओर शृंगारिक कोमल भावनाओं की अभिव्यक्ति मिलती है। इनकी रचनाएं सामाजिक और मानववादी हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपने व्यक्तित्व को ही उभारा है। उनका जीवन दर्शन अपनी अनुभूति और अपने विवेक से अनुप्राणित है। जनवादी, मानवतावादी, प्रगतिवादी विचारों के साथ वे अपनी रचनाओं में उपस्थित मिलते हैं। गांधीवादी और अहिंसा के पुजारी होते हुए भी कुरुक्षेत्र में उन्होंने धिक्कार स्पष्ट किया है और आत्मबल को महत्व दिया है। दिनकर की शैली में प्रसाद गुण, ओजस्वी स्वर और अनुभूति की तीव्रता है। सच्ची संवेदना और प्रवाह है। उनके चिंतन में अपने ही विस्तृत विचार और चिंतन दिखाई देता है। अभिव्यक्ति की तीव्रता है। गरीमामयी गंगा तट पर गेहूँ के साथ गुलाब का, शौर्य के साथ शौन्दर्य का वैभव द्रष्टव्य है। मृदु मिट्टी की महिमा किसी से छुपी हुई नहीं है। जिस प्रकार कौसानी ग्राम का प्राकृतिक सौंदर्य सुमित्रानंदन पंत को प्रकृति प्रेमी बना दिया। प्रकृति के मोह में आकंठ डूबा हुआ कवि हृदय अनायास अपनी प्रियतम के समक्ष निःसंकोच कह डाला -

“ छोड़ द्रुमों की मृदु छाया / तोड़ प्रकृति से भी माया,

बाले तेरे बाल जाल में / कैसे उलझा दूं लोचन,/ भूल अभी से इस जग को ।”

उसी प्रकार गंगा तट की मृदु मृदा ने ओजस्वी स्वर साधक दिनकर को जन्म भूमि के प्रति असीम प्रेम और भक्ति उमड़ाने वाला राष्ट्रकवि बना दिया। यदि गंगा किनारे दिनकर पैदा न होते तो शायद कवि होकर भी देशभक्ति से सराबोर राष्ट्र कवि नहीं हो पाते।

कलम और तलवार के महत्व पर विचार न करते। विज्ञान को विनाशकारी न बताते।मनुष्य की शक्ति की प्रबलता सिद्ध न करते- खम ठोक ठेलता है जब नर पर्वत के जाते पांव उखड़। इनका जन्म 23 सितंबर 1908 को सिमरिया नामक स्थान में हुआ और इनकी मृत्यु 24 अप्रैल 1974 को चेन्नई में हुई सामान्य किसान रवि सिंह और उनकी पत्नी मनरूप देवी के पुत्र के रूप में दिनकर जी का आविर्भाव हुआ जो ओजस्वी राष्ट्र भक्ति से ओतप्रोत कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए। इनकी कविताओं में छायावादी युग का प्रभाव रहा ।दिनकर का बचपन ऐसे देहात में बीता जहाँ दूर तक फैले खेतों की हरियाली बांसों के झुरमुट आम के बगीचे आकाश के विस्तार थे ।प्रकृति की इस सुषमा का प्रभाव दिनकर के मन में बस गया। बचपन में ही उनके पिता का देहावसान हो गया इसलिए भाई बहनों के साथ उनका पालन पोषण उनकी विधवा माता ने किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा संस्कृत के एक पंडित के पास हुई मिडिल स्कूल बोरो नामक गांव में पास किए हाई स्कूल की शिक्षा मोकामा घाट हाई स्कूल से प्राप्त की। इसी बीच इनका विवाह हो चुका था और एक पुत्र के पिता भी बन गए थे। 1928 में मैट्रिक की परीक्षा पास की और 1932 में इतिहास विषय से पटना विश्वविद्यालय से ऑनर्स की परीक्षा पास की।छात्र जीवन में इनकी रुचि इतिहास राजनीतिक शास्त्र और दर्शनशास्त्र जैसे विषयों में थी। इन्होंने प्रधानाध्यापक के रूप में काम किया 1934 में बिहार सरकार के अधीन सब रजिस्ट्रार पद प्राप्त किया। उनका समूचा कार्यकाल बिहार के देहातों में बीता जिसके कारण पीड़ा का एहसास और दुख का अनुभव रहा। उन्होंने रेणुका, हुंकार, रसवंती और द्वंद गीतों की रचना की। यह रचनाएं अंग्रेज प्रशासकों

तक पहुंची और उनसे कैफियत तलब होने लगी, चेतावनी मिलने लगी। 4 साल में 22 बार उनका तबादला हुआ ।

1947 में जब देश आजाद हुआ तब बिहार विश्वविद्यालय में हिंदी के प्राध्यापक और विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए । 1952 में राज्यसभा के सदस्य चुने गए और 12 वर्षों तक संसद सदस्य रहे। 1964 से 1965 तक भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे । 1965 से 1971 ईस्वी तक हिंदी सलाहकार भारत सरकार नियुक्त हुए। इनकी प्रथम तीन काव्य संग्रह रेणुका 1935 हुंकार 1938 और रसवती 1939 इनके आरंभिक आत्ममंथन युग की रचनाएं हैं। इनमें रेणुका में अतीत के गौरव के प्रति कवि का सहज आदर और आकर्षण दिखाई देता है । इसके साथ वर्तमान परिवेश की नीरसता से दुखी मन का दुख का परिचय भी मिलता है। हुंकार में अतीत के गौरव गान की अपेक्षा वर्तमान दत्य के प्रति आक्रोश प्रदर्शन की ओर अधिक उन्मुख जान पड़ता है। शामधेनी में दिनकर की सामाजिक चेतना स्वदेश और परिचित परिवेश की परिधि से बढ़कर विश्ववेदना का अनुभव करती जान पड़ती है। कुरुक्षेत्र रश्मि रथी और उर्वशी के विषय में भी थोड़ा जान लेना उचित होगा। कुरुक्षेत्र में महाभारत के शांति पर्व के मूल कथानक का ढांचा लेकर युद्ध और शांति के गंभीर और महत्वपूर्ण विषय पर दिनकर ने अपने विचार भीष्म और युधिष्ठिर के वार्तालाप के रूप में प्रस्तुत किया है। कुरुक्षेत्र के बाद उर्वशी में उनके विचार तत्व की प्रधानता मिलती है। गांधीवादी हिंसा की आलोचना करने वाला रचनाकार कुरुक्षेत्र का हिंदी जगत में हाजिर हुआ है। उर्वशी में कामाध्यात्म को प्रमुखता दी है।

गद्य - अर्धनारीश्वर, रेती के फूल, संस्कृति के चार अध्याय, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, काव्य की भूमिका। दिनकर प्रगतिवादी और मानव वादी कवि के रूप में हिंदी साहित्य जगत में माने जाते हैं। भूषण के बाद इन्हें ही वीर रस का सर्वश्रेष्ठ कवि स्वीकार किया गया है। इनकी महान रचनाएं रश्मि रथी कुरुक्षेत्र परशुराम की प्रतीक्षा उर्वशी संस्कृति के चार अध्याय आदि विश्व

विख्यात हैं। विस्तृत साहित्यिक रचनाओं के बीच उपस्थित अनेक पंक्तियां इनकी काव्य कला का परिचय देती हैं।

उर्वशी भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित है। इसमें मानवीय प्रेम वासना और संबंधों के इर्द-गिर्द की कथाचक्र घूमती है। उर्वशी एक परित्यक्ता अप्सरा की कहानी है। इसमें कामाध्यात्म प्रबल रूप से दिखाई देता है। कुरुक्षेत्र महाभारत से संबंधित विषय वस्तु पर आधारित है। जिसमें शांति पर्व की विषय वस्तु है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद लिखी गई यह रचना अपने आप में श्रेष्ठ है। शाम धेनी सामाजिक चिंतन के अनुरूप लिखी गई है। संस्कृति के चार अध्याय में दिनकर जी ने सांस्कृतिक भाषाई और क्षेत्रीय विभिन्नताओं के बावजूद भारत की एकता का संदेश दिया है। इनकी रचनाओं की प्रखरता को देखते हुए नामवर सिंह ने कहा है कि दिनकर जी अपने युग के सचमुच सूर्य थे। राजेंद्र यादव ने उनकी रचनाओं का प्रभाव स्वीकार किया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार दिनकर जी अपने समय के कवियों में सबसे ज्यादा लोकप्रिय थे। इस प्रकार दिनकर जी की काव्य प्रतिभा पर कई समालोचकों ने सम्मानजनक बात कही है। इनकी कुरुक्षेत्र रचना के लिए काशीनागरी प्रचारिणी सभा सम्मान मिला। संस्कृति के चार अध्याय के लिए साहित्य अकादमी सम्मान मिला। दिनकर जी आज भी प्रासंगिक हैं।

राष्ट्रकवि_रामधारी_सिंह_दिनकर अगर 1962 में चीन_से_युद्ध हारने के बाद संसद_भवन में जवाहरलाल_नेहरू के आंखों में आंखें डाल कर कड़वे प्रश्न अगर नहीं किए होते तो शायद उसी युद्ध के बाद भी चीन_भारत का बहुत बड़ा नुकसान करता। यह सोचने वाली बात यह है कि रामधारी सिंह दिनकर को जवाहरलाल नेहरू ने ही राज्यसभा का सदस्य बनाया था। आज वैसे ही रामधारी सिंह दिनकर की जरूरत है जो मोदी_जी की आंखों में आंखें डाल कर देश हित में कड़वे_सवाल करें।
